International Journal of Engineering & Scientific Research
Vol. 6 Issue1, January-2018,
ISSN: 2347-6532 Impact Factor: 6.660
Journal Homepage: http://www.esrjournal.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gage as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities

भारतीय इतिहास के धार्मिक स्त्रोत

अन्जू मलिक

इतिहास प्राध्यापिका, रा0व0मा0वि0 ढ़ाणा (झज्जर)

संक्षेपिका :–

इतिहासकार एक वैज्ञानिक की भांति उपलब्ध सामग्री की समीक्षा करके इतिहास का सही चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है। उसके लिए साहित्यिक साधन, पुरातात्विक साधन और विदेशियों के वर्णन आदि सभी का महत्व है। प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए शुद्ध ऐतिहासिक साम्रगी का हमारे पास अभाव है। इससे पाश्चातय विद्वानों में यह अवधारणा बन गई है कि भारतीयों को इतिहास की ठीक संकल्पना ही नहीं थी, लेकिन वास्तव में आज का इतिहासकार ऐतिहासिक घटनाओं में कार्य–कारण संबंध स्थापित करने का प्रयत्न करता है किंतु प्राचीन भारतीय इतिहासकार केवल उन घटनाओं का वर्णन करता था जिससे जनसाधारण को कुछ शिक्षा मिल सके। प्राचीन भारतीय समाज के निर्माण में धर्म का बहुत अधिक महत्व था इसीलिए भारतीय इतिहास लेखन में भी धार्मिक प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्राचीन भारतीय साहित्य को हम दो भागों में बॉटते हैं– धार्मिक साहित्य व लौकिक साहित्य। इनसे हमें भारतीयों के जीवन के सामाजिक, बौद्धिक व धार्मिक जीवन की जानकारी अधिक व राजनीतिक जीवन की जानकारी सीमित प्राप्त होती है। धार्मिक साहित्य में वेदों, उपनिषदों, आरण्यकों, ब्राहम्ण ग्रंथों, महाकाव्यों, सूत्र ग्रंथों, वेदांगो, पुराणों आदि का अध्ययन किया जाता है। लौकिक साहित्य की रचना उत्तर वैदिक काल में हुई, जिनमें कौटिल्य का अर्थशास्त्र, विशाखदत्त का मुद्राराक्षस, पाणिनि की अष्टाध्यायी, बाणभट्ट का हर्ष चरित तथा कल्हण की राजतरंगिणी का नाम मुख्य रूप से लिया जा सकता है।

संकेतशब्द – लौकिक साहित्य, धार्मिक साहित्य, ऋग्वैदिक साहित्य, ब्राहम्ण ग्रंथ, आरण्यक।

प्राचीन भारतीय संस्कृत साहित्य :–

भारत का प्राचीन साहित्य प्रधानतः संस्कृत भाषा में लिपिबद्ध किया है। संस्कृत भाषा हमारी राष्ट्रीय निधि है तथा यह हमारी संस्कृति का मुख्य वाहन है। भारतीय संस्कृत साहित्य का विभाजन दो भागों में किया गया है :– (a) लौकिक साहित्य (b) धार्मिक साहित्य

(a) लौकिक साहित्य :– (i) ऐतिहासिक साहित्य (ii) अर्धऐतिहासिक साहित्य

(i) ऐतिहासिक साहित्य :– कौटिल्य का अर्थशास्त्र, शुक्र नीतिसार, कामंदकीय नीतिसार, बृहस्पति अर्थशास्त्र, राजतरंगिणी, गुजरात के इतिहासकार, सिंधु व नेपाल के इतिहासकार।

(ii) अर्धऐतिहासिक साहित्य :– पाणिनी की अष्टाध्यायी, पंतजलि का महाभाष्य, कालिदास का मालविकाग्निमित्रम्, विशाखादत का मुद्राराक्षस, हर्ष चरित, पृथ्वीराज चरित या पृथ्वीराज रासो, विक्रमांकदेव।

(b) **धार्मिक साहित्य :–** धार्मिक साहित्य में वेदों, उपनिषदों, आरण्यकों, ब्राहम्ण ग्रंथों, महाकाव्यों, सूत्र ग्रंथों, वेदांगो, पुराणों आदि का अध्ययन किया जाता है। इनके अध्ययन से हमें भारतीय इतिहास के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। धार्मिक साहित्य को मुख्यतः दो भागों में बांटा जाता है – (I) ऋग्वैदिक साहित्य (II) उतर वैदिक साहित्य।

(I) ऋग्वैदिक साहित्य

(1) वेदः– ऋग्वेद आर्यों का प्राचीनतम ग्रंथ है। शेष तीन वेद – यजुर्वेद, सामवेद तथा अर्थववेद बाद की रचना है। वेद शब्द संस्कृत के विद् धातु से बना है जिसका अर्थ है 'ज्ञान'। वेदों में ज्ञान, कर्म तथा उपासना ये तीनों कांड है। प्रसिद्ध विद्वान मैक्समूलर, स्वामी दयानंद सरस्वती दारा शिकोह तथा मोरीस फिलिप इन्हें ईश्वर (ब्रहम्) कृत मानते। वे इन्हें संसार के प्राचीनतम ग्रंथ मानते हैं। मुख्य वेद 4 हैं:–

(i) ऋग्वेद :– ऋग्वेद आर्यों का ही नहीं विश्व का प्राचीनतम ग्रंथ है। यह दो शब्दों (ऋक् + वेद) से मिलकर बना है। इसका अर्थ है – स्तुति करना। अतः ऋग्वेद स्तुति मंत्रों या ऋचाओं का संग्रह है। इसमें 10 मण्डल 1028 सूक्त तथा 10580 ऋचाएँ हैं। गुत्समद, विश्वामित्र, वासुदेव, अत्रि, भारद्वाज, वशिष्ठ, कण्व तथा अंगिरा ऋग्वेद के ऋषि हैं। इनके अतिरिक्त घोषा, काक्षावृति, शची, पौलोमी, श्रद्धा,

कामायनी तथा जुह ऋग्वेद की स्त्री ऋषिकाएं हैं। ऋग्वेद में प्राचीन भारतीय संस्कृति, दर्शन शास्त्र, बहु देवतावाद व एकेश्वरवाद का समन्वय तथा भूगोल पर प्रकाश डाला गया है। इसमें काबुल, स्वात, गोमती, कुर्रम, सिंधु, गंगा, यमुना तथा सरस्वती आदि आर्य नदियों तथा पंजाब की पांच नदियों सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब तथा झेलम का वर्णन मिलता है। यही स्थल आर्यो की सभ्यता के विकास की जन्म स्थली है।

(ii) यजुर्वेद :– यजुः का अर्थ है – यज्ञ। यजुर्वेद में यज्ञ की विधियों का विवरण मिलता है। इसका कुछ भाग गद्य तथा कुछ पद्य में है। इसकी दो शाखाएं है – **कृष्ण** तथा **शुक्ल**। कृष्ण शाखा में ऋचाएं, प्रार्थनाएं तथा यज्ञ संबंधी सूक्त है जबकि शुक्ल पक्ष में गद्य भाष्य है। यजुर्वेद संहिता के बहुत से सूक्त अर्थववेद तथा ऋग्वेद से लिए गए है। यह एक कर्म काण्ड प्रधान ग्रंथ है तथा इसमे यज्ञ करने वाले ब्राहम्णों के कर्तव्यों का उल्लेख मिलता है। इसमें 40 अध्याय तथा 200 मंत्र हैं। इसमें आर्यों की सामाजिक तथा धार्मिक स्थिति का ज्ञान होता है। इसी ग्रंथ से पता चलता है कि ऋग्वेद कालीन आर्य सिंधु नदी की घाटी से कुरूक्षेत्र तक पहुॅच गए थे। इससे हमें आर्यो की वर्ण व्यवस्था तथा आश्रम व्यवस्था का भी पता चलता है।

(iii) सामवेद :– साम का अर्थ है – गान। इस ग्रंथ में उन मंत्रों का संकलन हैं जो यज्ञ के अवसर पर गाए जाते थे। इसमें कुल 1549 श्लोक है जिसमें से 75 को छोड़कर शेष ऋग्वेद से लिए गए है। सामवेद की हजार शाखाओं का उल्लेख हमें पुराणों से मिलता है। यह तीन रूपों में मिलता है :–

कौथूम – गुजरात में प्रचलित
जैमिनीय– कर्नाटक में प्रचलित
राणायनीय – महाराष्ट्र में प्रचलित

उद्गाता नामक होतागणों द्वारा सोमयज्ञ में उच्चारित की जाने वाली ऋचाओं का इसमें संकलन किया गया है। इस वेद का भारतीय संगीत के इतिहास की दृष्टि से बहुत अधिक महत्व है। यह यज्ञों के विधान के विकास पर प्रकाश डालता है।

(iv) अर्थववेद :– अर्थववेद की दो शाखाएं है – शौनकीय व पैप्पलाद। पैप्पलाद अधिक महत्व रखता है। शौनकीय शाखा में 20 मण्डल, 731 ऋचाएं तथा 5839 मंत्र हैं जिनमें से 1200 मंत्र ऋग्वेद से लिए गए है। अंतिम दो या तीन मण्डल बाद की रचनाएं हैं। इसमें कुछ ऋचाएं गद्य में है तथा कुछ पद्य में हैं। इसमें अधिकांश मंत्र आयुर्वेद से संबन्धित हैं जिसमें रोगों से बचने के लिए औषधियों, सांप के विष को दूर करने हेतु मंत्रो का संकलन है। इसमें उतरकालीन वैदिक आर्यो की पारिवारिक, सामाजिक तथा

राजनीतिक जीवन पर प्रकाश डाला गया है। इसमें हमें भारतीय विज्ञान की उपयोगी जानकारी मिलती है। इस काल में आर्यो तथा अनार्यो का धार्मिक विचारों का समन्वय हो गया था।

(2) ब्राहम्ण ग्रंथ :– वेदों को समझना बहुत कठिन था। इसलिए ऋषियों ने जन साधारण के लिए ब्राहम्ण ग्रंथ लिखकर उनकी सरल व्याख्या की । इन्हें गद्य में लिखा गया है। इन ग्रथों में वैदिक यज्ञों के स्वरूप तथा विधियों का वर्णन किया गया है। प्रत्येक वेद के साथ किसी न किसी ब्राहम्ण ग्रंथ का संबंध है। ऋग्वेद के दो ब्राहम्ण ग्रंथ हैं – ऐतरेय तथा कौषितकी। ऐतरेय ब्राहम्ण में यज्ञ, अग्निहोत्र, राज्याभिषेक तथा कुछ प्राचीन अभिषिक्त राजाओं का उल्लेख है। इस ग्रंथ को अनुश्रृत्या महिदास ऐतरेय द्वारा रचित माना गया है। कौषितकी ब्राहम्ण में सोम यज्ञ तथा दूसरे यज्ञों का विवरण है। कृष्ण यर्जुवेद का ब्राहम्ण ग्रंथ तैतरीय तथा शुक्ल यर्जुवेद का शतपथ ब्राहम्ण है। शतपथ ब्राहम्ण में 100 अध्याय है और इसमें गांधार, केकय, शालव, पांचाल, कुरू, कौशल तथा विदेह आदि जनपदों का उल्लेख है।

तांडव महाब्राहम्ण (पंचवीश ब्राहम्ण), षड़विंश ब्राहम्ण तथा जैमिनिय ब्राहम्ण सामवेद के ग्रंथ है। तांडय ब्राहम्ण में उस विधि का वर्णन है जिसके द्वारा अनार्य वर्ग के व्यक्ति आर्य परिवारों में सम्मिलित किए जाते थे। षडविंश ब्राहम्ण तांडय महाब्रहाम्ण का एक जोड़त्र है। जेमिनिय ब्राहम्ण के विषय में बहुत अधिक जानकारी नहीं है। गोपथ ब्राहम्ण का संबंध अर्थववेद से जोड़ा गया है। यह बहुत बाद का ग्रंथ है।

(3) आरण्यक :– आरण्यक ब्राहम्ण ग्रंथों का ही एक भाग है। इनका अध्ययन ग्रामों या नगरों से दूर वनो में होता था। इसलिए इनका नाम आरण्यक पड़ा। इन ग्रंथों का विषय आत्म चिंतन है जिनका पठन – पाठन वानपरस्थी मुनि तथा बनवासी किया करते थे। इनमें जीवन के रहस्यों तथा दर्शन की चर्चा की गई है। आरण्यकों में उत्पन्न विचार धाराओं का विकास उपनिषद्ों में होता है। ऐतरेय, शांखायन, तैतरीय, मेत्रायणी, माध्यानंदिन बृहदारण्यक और तलवकार आरण्यक मुख्य आरण्यकों में गिने जाते हैं।

(4) उपनिषद :– उपनिषद् का अर्थ है – समीप बैठना। अतः गुरूओं के समीप बैठकर शिष्य जो ज्ञान प्राप्त करता था उन्हीं से उपनिषद् की रचना हुई। इनमें आध्यात्म विद्या का बड़े गूढ़ रहस्यमयी रूप से उल्लेख हुआ है। इनमें मानव कल्याण के शाश्वत सुख की कल्पना की गई है। यह ज्ञान प्रधान ग्रंथ हैं जिनमें धर्म के बाह्य आडम्बरों का त्याग कर जीवात्मा, ब्रहम् तथा सृष्टि संबंधी दार्शनिक प्रश्नों का सुन्दर विवेचन किया गया है। उपनिषदों की संख्या 108 है। इनमें मुख्य है– ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माक्डूक्य, तैतीरीय, ऐतरेय, छांदोग्य, बृहदारण्यक, श्वेताम्बर, कौषितकी, महानारायण आदि। मैत्रेयी तथा गार्गी आदि विदुषी नारियों ने इनके निर्माण में सहयोग दिया। इनमें वे ही उपनिषद् सबसे अधिक प्रमाणिक माने गए है जिन पर शंकराचार्य का भाष्य मिलता है।

मैकडोनेल तथा राजेन्द्र लाल मिश्र के अनुसार उपनिषदों का रचना काल बिम्बिसार के पूर्व का काल है। राजा परीक्षित तथा उनके पुत्र जनमेजय तथा उनके बाद के राजाओं का उल्लेख उपनिषदों में मिलता है।

(II) उतर वैदिक साहित्य :–

(1) वेदांग :– वेदों के अध्ययन को और अधिक सरल बनाने के लिए जिन ग्रंथों की रचना की गई उन्हें वेदांग कहते है। वेदांग संख्या में 6 है।

(i) छन्द शास्त्र :– यह शब्दों की व्याख्या से संबंधित हैं।

(ii) कल्प सूत्र :– इसमें यज्ञ की विधि दी गई है।

(iii) ज्योतिष :– इसमें ब्रह्माण्ड तथा सूर्य मण्डल का वर्णन है।

(iv) निरूक्त :– यह वैदिक शब्दों का भाषा विज्ञान है। इसके अध्ययन से वेदों के वास्तविक रहस्य का ज्ञान होता है।

(v) शिक्षा :– इसमें वेद मंत्रों के उच्चारण की विधि दी गई है।

(vi) व्याकरण :– इसमें वैदिक शब्दों के अर्थ का विवेचन है।

(2) सूत्र ग्रंथ :– कालांतर में वैदिक साहित्य का परिमाण बहुत बढ़ गया जिसे स्मरण रखना कठिन हो गया। अतः विद्वानों ने सूत्र नामक शैली का आरंभ किया। महर्षि पाणिनी ने इनकी विशेषता में बताया है कि यह कम से कम शब्दों में लिखे जाते है। इनकी भाषा व विचार असंदिग्ध होते है तथा ये सारगार्भित होते है। कल्प सूत्रों को 3 भागों में बाटां गया है –:

(i) श्रोत सूत्र :– इसमें यज्ञ के नियम, उपनियम, विधि, निषेध बलि तथा सोमरस आदि का विवरण दिया है।

(ii) गृह सूत्र :– इसमें मनुष्य के कर्तव्यों तथा समस्त जीवन, बचपन, शिक्षा काल, विवाह तथा मृत्यु संस्कारों का वर्णन है।

(iii) धर्म सूत्र :– इसमें सामाजिक रीति – रिवाजों, दीवाली व फौजदारी कानूनों का विवरण है।

(3) उपवेद :– प्रत्येक वेद का एक उपवेद है। जिनमें औषधि विज्ञान, बुद्ध विद्या, संगीत कला का विवरण आदि है।

(i) आयुर्वेद :– यह त्रग्वेद का उपवेद है। इसमें चिकित्सा संबंधी विस्तृत ज्ञान है। धनवन्तरि, चरक, जीवक व पंतजलि इसके आचार्या है।

(ii) धनुर्वेद :– यह यजुर्वेद का उपवेद है। इसमे शस्त्र प्रयोग व संहार शिक्षा का विवरण है। कृशाश्व, विश्वामित्र, अग्निवेश, द्रोण, कृप आदि इसके आचार्य है।

(iii) गधर्ववेद :– यह सामवेद का उपवेद है। इसमे संगीत तथा नृत्य कला का विवरण है। नारद, तुम्बरू, विश्वावसु, भरत, शिलालि इसके आचार्य है।

(iv) शिल्पवेद :– यह अथर्ववेद का उपवेद है। इसमे वास्तु कला व कुछ अन्य कलाओं का विवरण है।

(4) स्मृतियॉ :– स्मृतियॉ वैदिक आर्यो के कानून सबंधी ग्रंथ है। इनमें दैनिक जीवन संबंधी नियमों, उपनियमों तथा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा धार्मिक विचारों पर गम्भीरता से लिखा गया है तथा इनके संबंध में उचित – अनुचित पर प्रकाश डाला गया है। स्मृतियों में मुख्य है– मनु कृत – मनु स्मृति, पाराशरकृत – पाराशरस्मृति, नारद कृत – नारदस्मृति, याज्ञवल्क्य कृत –याज्ञवल्क्य स्मृति, मनु स्मृति विश्व की सबसे पहली लिखित कानूनी पुस्तक है।

(5) षट्दर्शन :– उपनिषदों में वर्णित दार्शनिक विषयों की विद्वानों ने अपने – 2 ढ़ंग से व्याख्या की। इन व्याख्या ग्रंथों को ही दर्शन का नाम दिया गया है। इसमें तात्कालिक सामाजिक तथा दार्शनिक जीवन का उच्च आदर्श प्रस्तुत है। यह संख्या में 6 हैं :–

(i) गौतम का न्याय शास्त्र :– न्याय के अंगो का विवरण।

(ii) कणाद का वैशेषिक शास्त्र :– द्रव, गुण, सामान्य, विशेष, समावय, अभाव आदि 7 पदार्थो का निरूपण।

(iii) जैमिनी का पूर्व मिमांसा :– कर्मकाण्ड प्रधान तथा विरोधी वैदिक वाक्यों का समन्वय का प्रयत्न।

(iv) व्यास का उतर मिमांसा :– ब्रहम् तत्व का निरूपण तथा ईश्वर की उपासना पर बल।

(v) कपिल का सांख्य दर्शन :– आधिभौतिक, आधिदैविक व आध्यात्मिक दुखों से मुक्ति का सुझाव।

(vi) पातंजलि का योग शास्त्र :– योग, समाधि, क्रिया योग तथा नियम, यम, संयम का विवरण।

(6) पुराण :– पुराणों की संख्या 18 है। इनमें सम्राटों, ऋर्षि मुनियों व महापुरूषों तथा धार्मिक व राजनीतिक विषयों का निरूपण किया गया है। प्रत्येक पुराण के 5 भाग है– सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वंतर, वशानुचरित। गरूड़ पुराण में पौरव, इक्ष्वाकु व बृहद्रथ राजवंशों का विवेचन है। शेष पुराणों में महाकाव्य काल के बाद की राजनैतिक घटनाओं का उल्लेख है। विष्णु पुराण में मौर्य वंश, मत्स्य पुराण में आंध्रवंश तथा वायु पुराण में गुप्त शासकों की शासन व्यवस्था का विवरण है। कल्पना – प्रधान होने पर भी इनका ऐतिहासिक महत्व है।

(7) महाकाव्य :– प्राचीन आख्यानों, गाथाओं, नाराशंसियो से संबंधित तथा ब्राहम्ण और वैदिक साहित्य के ग्रंथों से उल्लिखित तथ्यों से परिपूर्ण ऐतिहासिक काव्यों का उदय और विकास एक लम्बे समय में हुआ। महाकाव्यों से हमें प्राचीन राजनैतिक अवस्था का ज्ञान होता है।

(i) रामायण (ii) महाभारत (iii) गीता

संदर्भ – ग्रंथ

1. झा, द्विजेन्द्रनारायण और श्री कृष्ण मोहन श्रीमाली : प्राचीन भारतीय का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2002.
2. कौशांबी, डी0 डी0 : An Introduction to the study of Indian History, 1956.
3. शर्मा, आर0 एस0 : History of early India, 1983.
4. बशम, ए0 एल0 : The wonder that was India, 1963.
5. स्मिथ, वी0 ए0 : Early History of India, 1904.
6. विद्यालंकार, सत्यकेतु : मौर्य साम्राज्य का इतिहास, 1971.